आत्मिक ऊर्जा का स्वरूप थी दादी

वैसे तो संसार रूपी बेहद नाटक में हज़ारों मनुष्यात्माएं रोल अदा कर फिर चली जाती हैं। लेकिन कुछेक आत्माओं का पार्ट विशेष रहता है जो आत्मीय गुणों को साकार कर दूसरों की जीवन यात्रा में सहयोग प्रदान करते हैं। ऐसे विशाल हृदयी दादी प्रकाशमणि जी की पुण्य तिथि पर मैंने यही देखा-समझा-जाना कि दादी के सानिध्य में आते उनकी निश्छल दृष्टि, निर्मल भावनाएं व खुशनुमा सूरत ने हमारे हृदय को स्पर्श किया। यह अनुभव विश्व की लाखों आत्माओं का है चाहे वो उनसे एक बार भी मिली होंगी। दादी जी की निर्णय शक्ति ज़बरदस्त रही। उनके व्यक्तित्व में यह विशेष बात थी कि जिस भी सेवा कार्य में उन्होंने उम्मीद रखी उसका प्रारूप उसी तरह बन गया। बात 90 के दशक की है, जब ज्ञानसरोवर के निर्माण का कार्य आरंभ करना था। तब दादीजी ने मधुबन के भाइयों के मध्य यह बात रखी कि इस कार्य को कौन सम्भालेगा। यज्ञ इतिहास में यह पहला ऐसा विशाल प्रोजेक्ट था। इस प्रकार के कन्स्ट्रक्शन का इससे पूर्व किसी को अनुभव नहीं था। बस परमात्मा के विश्व परिवर्तन के कार्य को विशालता प्रदान करने के लिए प्रथम नींव डाली जा रही थी। ऐसे में दादी जी ने मुझे इस कार्य को क्रियान्वित करने का सुअवसर प्रदान किया।

- ब्र. कु. गंगाधर

संस्थान के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर जी ने कहा कि आपको ज्ञानसरोवर के निर्माण कार्य को देखना है। मुझे इस प्रकार के कार्य के बारे में कुछ पता नहीं था, कैसे होगा, बस ईश्वरीय कार्य की उस बेहद योजना में हमारी विशेषताओं की अंगुली लगाने का भाग्य बाबा से प्राप्त हुआ। दादीजी की निर्णय शक्ति व विश्वास के साथ उम्मीद रखने का यह मेरे जीवन का अनुभव था। परमात्मा के विशाल परिवर्तन के कार्य को आगे बढ़ाने में दादीजी का पार्ट कितना अहम था यह शब्दों में बताना कठिन है। लेकिन दादीजी विश्व में ईश्वरीय पताका फहराने के निमित्त रहीं।

श्रेष्ठ लीडर वह जो स्वयं लाइट रहे

दादीजी हर एक की विशेषता को एक सूत्र में पिरोकर यज्ञ सेवा के कार्य में लगाने में माहिर थीं। किसी की भी कमी को खत्म करना और उस आत्मा में खुशी का बल भरकर सेवा में लगाना, ऐसे दादी जैसा कुशल प्रशासक मैंने कोई नहीं देखा। दादी जी ने जबसे परमात्मा के कार्य को आगे बढ़ाने का जिम्मा लिया उनके जीवन में एक बात स्पष्ट रही कि दूसरे आगे बढ़ें, बस यही उनके व्यक्तित्व की विशेषता रही या ताकत रही इस विशाल संगठन को बनाने में। कार्य कितना भी बड़ा हो उसे पर्वत से राई और राई से रूई बना देना तथा निश्चिंत रहना उनकी था। सेवा साथियों के उमंग-उत्साह को बनाये रखना यह उनकी खूबी थी। हम पढ़ा करते थे, श्रेष्ठ लीडर वह जो स्वयं लाइट रहे और साथियों को भी लाइट रखे। यह क्वालिटी दादीजी के व्यक्तित्व में नज़र आती थी।

संकल्प शक्ति में सदा दृढ़ता

एक बार जब ज्ञानसरोवर के निर्माण कार्य में किसी कारणवश रुकावट आ गई। दादी जी ने कहा कि योग करो, सब रुकावटें खत्म हो जायेंगी। सचमुच सबने योग किया और रुकावटें ऐसे खत्म हो गईं जैसे कि थीं ही नहीं। दादीजी की ईश्वर के प्रति ज़बरदस्त आस्था एवं विश्वास उनकी शख़्सियत को हर क्षेत्र में निखारता नज़र आता रहा। ईश्वरीय कार्य में कई विघ्न-रुकावटें व समस्याएं आईं परन्तु एक परमात्मा में आस्था रूपी शस्त्र के सामने सब नाकामयाब रहे। दादीजी की संकल्प शक्ति में सदा दृढ़ता झलकते देखी। मिलिनियम मिनट फॉर पीस का प्रोजेक्ट, ग्लोबल पीस जैसे विश्व व्यापी सेवा कार्यों को इतना सुचारू रूप से सफलता की मंज़िल तक पहुंचाना, यह दादी जी की ही हिम्मत व विश्वास का प्रतिफल था। इन सेवाओं से ही विश्व में ईश्वरीय कार्य का पर्दा खुला। दादीजी को `विश्व शांतिदूत' के सम्मान से नवाज़ा गया। ऐसी परमात्म पुँज दादी को उनकी आठवीं स्मृति दिवस शत् शत् नमन।

जहाँ पड़े कदम वहाँ रचा इतिहास

दादी प्रकाशमणि को मैं पचपन से जानती हूँ। सन् 1936 में, सिंध-हैदराबाद में जब ओम् मण्डली की शुरुआत हुई तो एक स्नेहमयी, लगनशील, आज्ञाकारी कुमारी के रूप में उनका पदार्पण हुआ। आते ही उनके हृदय में ईश्वर तथा ईश्वरीय परिवार के प्रति भरपूर प्यार देखा। उनका मन-वचन-कर्म हमेशा विशेषता संपन्न रहा, कभी साधारण चाल-चलन की तो झलक भी नहीं आई। प्यारे बाबा ने भी उनको आते ही टीचर का पद-भार संभलवा दिया। छोटे बच्चों की तो वे दिव्य शिक्षिका थीं ही, कुँज भवन में बड़ों के बीच भी टीचर की भूमिका बहुत अच्छी निभाते देखा। जीवन के हर कर्म में चाहे स्थूल हो या सूक्ष्म, उनको सदा कुशल ही देखा। बाबा द्वारा बनाए गए नियमों के पालन में तो हमारे सामने सैम्पल बनकर रहीं।

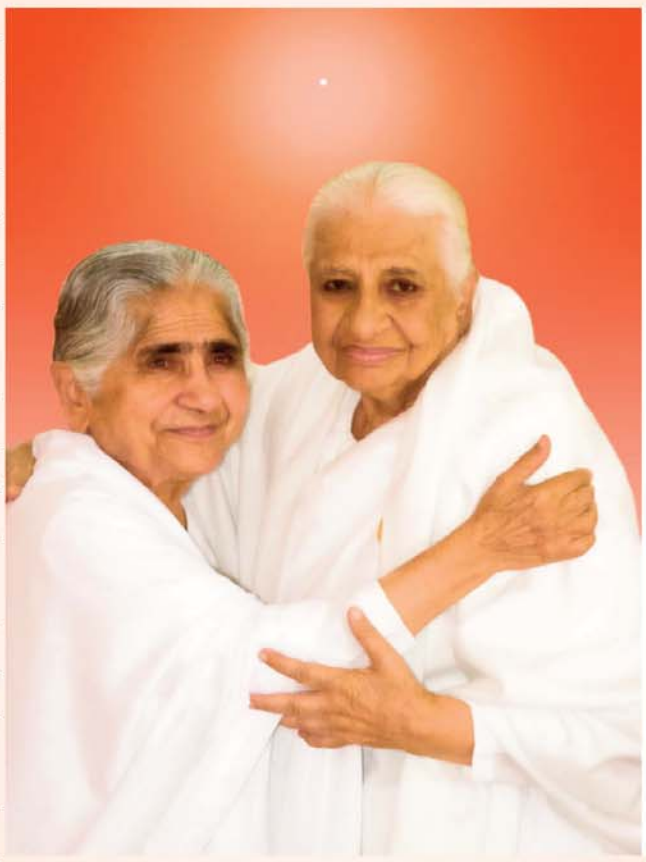

जब हम कराची में थे तो प्यारे बाबा उनको ईश्वरीय सेवा के विभिन्न निर्देश देते थे जैसे कि कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में ईश्वरीय संदेश भेजो, महात्मा गांधी जी को ईश्वरीय संदेश भेजो आदि-आदि। दादी जी बड़ी तत्परता से इन सभी को अमल में लाती थीं। वे बाबा के निर्देश, श्रीमत तथा इशारे को तुरंत पकड़ती थीं और पूरा करके दिखाने में हमारे लिए मार्गदर्शिका की भूमिका निभाती थीं।

जब हम आबू में आए तो स्थान, वातावरण, परिस्थितियाँ बदलने के कारण भिन्न-भिन्न बातें परीक्षा के रूप में सामने आईं पर दादी जी को हर परिस्थिति में अचल-अडोल देखा। कभी उनको व्यर्थ संकल्प-बोल में नहीं देखा। सेवा के क्षेत्र में भी, उनके जहाँ-जहाँ कदम पड़े, वहाँ-वहाँ स्थापना का नया इतिहास रचा गया। दादी ने सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया। यज्ञ-परिवार में दिल से दिल मिलाने में और दिलाराम भगवान से दिल का प्यार पाने में प्रेरणाएँ भरीं। बाबा के अव्यक्त होने पर मेरे मन में प्रश्न था कि अब मुरली कौन सुनायेगा? प्यारे बाबा ने कहा, दादी (प्रकाशमणि) मुरली सुनायेंगी और पुरानी मुरलियाँ दोहराई जायेंगी। सचमुच, दादी जी ने ऐसी मुरली सुनाई जो साकार बाबा की भासना हमें मिलती रही। सन् 1974 में दादी और दीदी, दोनों ने मुझे विदेश सेवा के लिए भेजा। प्यारे बाबा की श्रीमत और बड़ों की दुआओं से जर्मनी, अफ्रीका, कनाडा, करेबियन आदि स्थानों पर सेवा का बीज पड़ा। सन् 1977 में दादी हमारे पास आईं। वहाँ ठण्ड बहुत होती है, मैं अमृतवेला कमरे में ही योग में बैठ गई। दादी ने इशारा दिया, बाबा के कमरे में चलो ना, तब से लेकर मैंने निरंतर ऐसी ही आदत बना ली है। दादी ने ही लंदन में ट्रैफिक कंट्रोल प्रारंभ करने का इशारा दिया। जब दादी विदेश के दौरे पर आती थीं, मुझे ये भासना आती थी कि दादी नहीं, स्वयं बाबा ही आए हैं।

डबल विदेशी भाई-बहनों को देखकर दादी हमेशा ही कहती थीं कि आप पूर्वजन्म में तो भारत में ही थे, इस अंतिम जन्म में, ईश्वरीय सेवार्थ आप इन भिन्न-भिन्न स्थानों पर, भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में आ गये हो। दादी की नैचुरल रूहानियत, उनका ईश्वरीय प्रेम और कल्प पहले की स्मृति पक्की कराने की विधि बड़ी प्रभावशाली थी। वे पहली झलक में ही किसी भी आत्मा में इतना अपनापन भर देती थीं कि दूरी या अनजानेपन का भान मिट जाता था। यह मेरा महान भाग्य है कि ऐसी महान् दादी ने सदा ही मुझ पर हक रखा। मैंने भी दादी की समीपता का बहुत सुख पाया है। दीदी मनमोहिनी जी ने सन् 1983 में जब देह त्याग किया तो सभी का विचार था कि शायद अब मुझे मधुबन में ही रखेंगे परन्तु मीठी दादी ने ही उमंग दिलाकर मुझे विश्व सेवा पर भेजा। मधुबन मुख्यालय की ज़िम्मेवारियाँ निभाते हुए दादी स्वयं भी विश्व सेवा पर जाती रहीं और जहाँ-जहाँ उनके कदम पड़े, वहाँ-वहाँ ईश्वरीय सेवा के नये बीच अंकुरित हुए, सेवा वृद्धि को पाती गई। देखते ही देखते आज हमारे सामने गलोब पर बाबा का परचम लहराया।

साकार बाबा की पालना को आगे बढ़ाया दादी ने

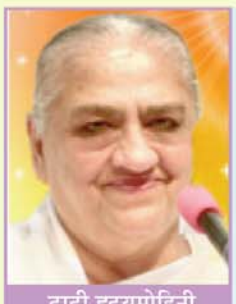
दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

साकार बाबा इस बात पर बहुत ध्यान देते थे कि हर बच्चा, मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) बहुत ध्यान से सुने। यदि मुरली सुनते समय किसी बच्चे को उबासी आ जाती थी तो बाबा तुरन्त कहते थे कि इसको उठाओ, नहीं तो वायुमण्डल पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। बाबा मिसाल देते थे कि जैसे सीप पर जल की बूँद गिरती है तो मोती बन जाती है, इसी प्रकार आपकी बुद्धि पर भी ये ज्ञानामृत की बूँदें पड़ रही हैं, एक-एक बूँद ज्ञान-मोती का रूप धारण करती जा रही हैं। अतः हमारे में इतने मोती बाबा डालते हैं, भरपूर करते हैं मोतियों से, तो हमारा इतना ध्यान होना चाहिए। बाबा के सामने मुरली सुनने बैठे बच्चों में से, यदि किसी ने बाबा की मधुर शिक्षाएँ सुनकर चेहरे द्वारा प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की तो बाबा कहते थे, यह कौन बुद्धू सामने बैठा है? इतना ध्यान बाबा बच्चों पर देते थे। बाबा का प्यार भी भरपूर था तो शिक्षायें भी भरपूर देते थे। मान लो, किसी बच्चे ने कोई गलती कर दी तो बाबा उसे व्यक्तिगत रूप से बुलाकर गलती नहीं सुनाते थे। मुरली में ही सब सुना देते थे कि महारथी बच्चे भी ऐसे-ऐसे करते हैं, बाबा के पास रिपोर्ट आती है। गलती करने वाला तो समझ जाता था कि यह बात मुरली में मेरे लिए आई है। मुरली के बाद, बाबा के कमरे में हम बहनें और भाई जाते थे जिसे चैम्बर के नाम से जाना जाता था। बाबा अपनी गद्दी पर विष्णु मुआफिक लेट-से जाते थे और हम सभी बच्चे आस-पास बैठ जाते थे। मान लो, बाबा ने मुरली जिस बच्चे के लिए चलाई, वह भी बाबा के सामने चैम्बर में आ गया तो उसका मन तो अन्दर से खा रहा होता था कि बाबा अभी भी कुछ कह ना दें, पर बाबा कभी नहीं कहते थे। जो कहना होता था, मुरली में ही कह देते थे। यदि, वह हिम्मत करके बाबा के बहुत करीब भी चला जाये तो भी बाबा और ही प्यार करते थे। मुरली के बाद उस बात को कभी नहीं दोहराते थे कि बच्चे, तुमने अमुक गलती की है। फिर वह बच्चा भी भूल जाता था। इस प्रकार बाबा बहुत प्यार करते थे, गलती करने वाला बेधड़क होकर बाबा के सामने जा सकता था, पर उसको स्वयं ही इतना एहसास हो जाता था कि भविष्य में उस भूल को कभी नहीं दोहराता था। बाबा हँसा-बहला कर उस बात को समाप्त कर देते थे, पर वह बच्चा पूरा बदल जाता था।

दादी जी दिल में किसी की, कोई बात नहीं रखती थीं

ऐसा ही दादी जी का स्वभाव था। यदि किसी छोटी बहन ने दादी जी को सुनाया कि आज मुझे बहुत रोना आया, फीलिंग आई आदि-आदि तो दादी कभी भी उसकी बात बड़ी बहन को सुनाकर उलाहना नहीं देती थीं कि तुमने छोटी बहन के साथ ऐसा-वैसा क्यों किया। हाँ, दादी जी उस छोटी बहन को ऐसा प्यार देती थीं जो उसके मन को पूरा ठीक कर देती थीं। पर बड़ी बहन को बुलाए, फिर कहे, तुमसे छोटी बहन नाराज़ है, क्या करती हो, कभी नहीं। दादी क्लास कराती थीं, सब कायदे-कानून समझाती थीं, पर व्यक्तिगत इस प्रकार, सीधा नहीं कहती थीं कि तुमने ऐसा किया है। इस प्रकार, दादी भी दिल में कुछ नहीं रखती थीं। क्योंकि दिल में कोई भी बात घर कर जाए तो खुशी गुम हो जाती है। बाबा ने कहा है, जीवन भले जाए पर खुशी न जाए। बाबा की ये बात जो दादी ने अपने जीवन में धारण की, उसे हमें भी अपने जीवन में धारण करने का पूरा पुरुषार्थ करना है।